'8% कपड़ा कंपनियां ही मई में सैलरी देने की हालत में'

क्लोदिंग मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने कहा, हालात न सुधरे तो जून में केवल 5% कंपनियां दे सकेंगी सैलरी

- लॉकडाउन के चलते इनका कैश-फ्लो पूरी तरह बंद
- देश के 90 पर्सेंट अपैरल रिटेल अभी भी फिजिकल स्टोर के रूप में

बिजनेस डेस्क: देश में सिर्फ 5 पर्सेंट ऐसे अपैरल रिटेलर्स और मेकर्स हैं, जिनके पास बिना सरकारी सहयोग के जून तक अपने कर्मचारियों को सैलरी देने के लिए पर्याप्त पैसा है। कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए लागू लॉकडाउन के चलते इनका कैश-फ्लो पूरी तरह बंद हो गया है। क्लॉथिंग मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (CMAI) ने बताया कि उसके सिर्फ 8 पर्सेंट सदस्यों के पास अगले महीने की सैलरी देना का पैसा है। देश के 90 पर्सेंट अपैरल रिटेल अभी भी फिजिकल स्टोर के रूप में हैं। CMAI रेमंड, फ्यूचर ग्रुप और शॉपर्स स्टॉप सहित करीब 24,000 मैन्युफैक्चरर्स का प्रतिनिधित्व करती है।

एक्सपोर्ट बेहद कमजोर

खपत बढ़ाने, कैश-इंजन को दोबारा शुरू करने और अर्थव्यवस्था में जान फूंकने के लिए सभी प्रमुख रिटेलरों ने संयुक्त रूप से सरकार से अपील किया है कि मॉल, शहर के मुख्य बाजार और ई-कॉमर्स सहित सभी ट्रेड चैनलों के गैर-आवश्यक रिटेल को शुरू करने की इजाजत दी जाए। कैल्विन क्लाइन, टॉमी हिलफिगर, एरो और गैप जैसे ब्रांड्स की बिक्री करने वाली अरविंद लिमिटेड के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर कुलिन लालभाई ने बताया, 'एक्सपोर्ट बेहद कमजोर रहने वाला है। ऐसे में हमें अपनी फैक्ट्रियों को चलाने की मांग की जरूरत है।' रिटेल इंडस्ट्री में करीब 4.6 करोड़ लोग काम करते हैं, जिसमें से 90 पर्सेंट ब्लू कॉलर सेगमेंट में हैं। महामारी के चलते इसी वर्ग की नौकरी जाने का सबसे अधिक खतरा है। गैर-आवश्यक इंडस्ट्री को अधिक चोट इसलिए भी पहुंचेगी क्योंकि लॉकडाउन मार्च-मई के दौरान लागू रहा है, जिसे बिक्री के लिहाज से अच्छा सीजन माना जाता है।

रिटेलर्स का कहना कि अगर खपत और रिटेल दोनों साथ-साथ शुरू नहीं होते हैं, तो यह नुकसान और बड़ा हो सकता है। 15,000 से अधिक सदस्यों वाले रिटेलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के मुताबिक कुल रिटेल में फैशन और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे नॉन-एसेंशियल सेगमेंट का 50 पर्सेंट हिस्सा है, जबकि बाकी 50 पर्सेंट हिस्सा फूड और दूसरे जरूरी सेगमेंट का हैं।

> 'अगर रिटेल स्टोर्स नहीं खुलते हैं तो मैन्युफैक्चरिंग शुरू करने का कोई तुक ही नहीं है। हमें स्टोर्स को खोलने की जरूरत है।'
>
> *-राहुल मेहता, चीफ मेंटॉर, CMAI*

> 'खपत के बिना हमारे लिए सप्लाई चेन को शुरू करना नामुमकिन है। अगर हम अर्थव्यवस्था को दोबारा शुरू करना चाहते हैं तो हमें कैश की उपलब्धता सुनिश्चित करने की जरूरत है। नॉन-एसेंशियल इंडस्ट्री को उबरने में अधिक समय लगेगा। ऐसे में मौजूदा वर्किंग कैपिटल का 30-35 पर्सेंट और 6 महीने का मोराटोरियम मिलने की जरूरत है।' *-राकेश बियानी, एमडी, फ्यूचर रिटेल*